

THE OXFORD COLLEGE OF SCIENCE

Sub:- हिन्दी

Topic:- " गलीबाल वासिम"

हिन्दी असाइनमेंट

Submitted by:

SIRAJ.M. SIDDIQUI

II year, Bsc [PMCS]

19RNS85268

The Oxford College Science.

Submitted to,

Dr. Suresh Rathod Sir

Assistant professor

Dept. of Hindi

The Oxford College of Science.

INDEX . . .

| S.NO | Topic | Pg. No |
|------|---|---------|
| 01 | राजोबल वार्मिंग | 01 |
| 02 | राजोबल वार्मिंग के कारण | 02 - 05 |
| 03 | राजोबल वार्मिंग के प्रभाव | 05 - 07 |
| 04 | घातक परिणाम | 08 |
| 05 | राजोबल वार्मिंग का समाधान / बीकने का उपाय | 09 - 11 |
| 06 | निष्कर्ष | 11 |
| | उपसंकार | 12 |





ग्लोबल वार्मिंग :

ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ होता है जगतीरात्रि तापमान का बढ़ना। जब कोई परिवर्तन प्रकृति के नियम या गति के अनुसार नहीं होता है उसे ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं। ये सभी बदलाव मानव द्वारा प्रकृति में किया जाता है यह प्रकृति बातावरण और धरती को अपने तापमान से ज्यादा गर्म कर देती है।

इसी अप्राकृतिक गतिविधियों की वजह से ही धरती का तापमान नियमित रूप से बढ़ता जा रहा है। तापमान के बढ़ने की वजह से अंतरिका और हिमालय पर्वतों की एक जगतीरात्रि विघ्नती जा रही है। अगर ग्लोबल वार्मिंग की वजह से पूर्वी का तापमान हुसी तरह से बढ़ता रहेगा तो

ग्लोबल वार्मिंग का कारण

बहुत से कारणों की वजह से ग्लोबल वार्मिंग बढ़ी जा रही है। जिस तरह से ग्लोबल वार्मिंग बढ़ी जानसंख्या बढ़ा रही है। उस तरह से ग्लोबल वार्मिंग भी बढ़ी जा रही है।
 मनुष्य के हाथ संचालित घटकायिक क्रियाएँ जिसमें उद्योगों से निकलते गांव धुआं और बहुनों से निकलते गांव धुआं आदि हैं।

मनुष्य हाथ का डर - डाई - आक्साइड और सल्फर - डाई - आक्साइड दोनों मौसम की मुख्य रूप से किंव और पानी में प्रयोग किया जाता है। जिसकी वजह से पानी और वातावरण में मिल जाता है तो इनका असर उल्टा पड़ जाता है। यह वातावरण को ठंडा करने की जगह पर कर देता है क्योंकि इसमें ऐसे पदार्थ दोनों हैं।

ग्लोबल वार्मिंग के स्त्रोतों में वृद्धि के याक तरे
पर ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव देखा जा सकता है।
US भूगभीष्म सर्वेशार [US Geological Survey]
के अनुसार माटोंना ग्लोबियर नेशनल पार्क पर
150 ग्लोबियर मौजुद थे पर ग्लोबल वार्मिंग के
वजह से वर्तमान में मात्र 25 ग्लोबियर बचे
हैं, अधिक स्तर पर जलवायु में परिवर्तन तथा
तापमान से ऊर्जा [बायुमॉडल के उपरी सतह
पर ढंडा तथा ऊष्णकटिबंधीय महासागर के
गर्म होने से] लेकर तृफान अधिक अतंराक
गतिशाली और मजबूत बन जाते हैं। 2012 को
1885 के बाद सबसे गर्म वर्ष दर्ज किया
है तथा 2003 को 2013 के साथ सबसे
गर्म वर्ष के रूप में देखा गया है।



वायुमंडल के तापमान में डॉने वाली लगातार वृद्धि के कारणों में प्रदूषण भी एक कारण है। प्रदूषण कई तरह का होता है - वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, दबनी प्रदूषण आदि। प्रदूषण के कारण वायुमंडल में कई तरह की मस्तिशक्ति बढ़ती जा रही है। ये मस्तिशक्ति तापमान वृद्धि का मुख्य कारण है और प्रदूषण इन मस्तिशक्ति को बढ़ाते में मदद करता है।

ग्राहकीकरण की बढ़ावा देते हुए ग्रही दूलाकों में कारणों और कमजियाँ लगातार बढ़ती जा रही हैं। जिनसे विषेश पदार्थ, प्लास्टिक, रसायन, धुआँ आदि निकलता है, ये सभी पदार्थ वातावरण को गम्भीर करने का कार्य निभाते हैं,



प्रदूषण के लगातर बढ़ने की वजह से ग्लोबल वार्मिंग निरंतर बढ़ती रुटी जा रही है। प्रदूषण के बढ़ने की वजह से कार्बन आक्साइड की मात्रा भी बढ़ती जा रही है जिसकी वजह से ओजीज परत को भी बढ़ती जा रही है जिसकी वजह से आजान परत को भी दावि पहुँच रही है। जंगलों की कटाई, फैलियों और कारखानों से निकलने वाला धुआं, बढ़ती हुई जनसंख्या और गाड़नों के धुआं की वजह से ग्लोबल वार्मिंग का स्तर बढ़ रहा है।

ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव:

अमर इस तरह से ग्लोबल वार्मिंग बढ़ती रहती है जो भी बफिले स्थान है वो पिछल कर अपना आसीत्व खो देंगे। आजकल गमी और अधिक बढ़ती जा रही है और सर्वियों में बड़ कम होती जा रही है। जब इस

सर्वे को देखते हैं तो हमें पता चलता है कि पृथ्वी का तापमान धीरे - धीरे बढ़ता जा रहा है,

जो हमारी सामाज्य प्रक्रिय से कहीं ज्यादा तेजी से हो रहा है। हर एक साल के दौरान तापमान अधिक हो रहा है, ग्लोबल वार्मिंग की वजह से प्राकृतिक आपदाओं के आने का भी घटना बढ़ जाता है। जंगलों में उग्र लगनों और बर्फ पिछलने की वजह से बाढ़ का घतना बढ़ जाता है।

जो लोग समुद्र नदि पर रहते हैं उनके लिए बहुत अधिक घतना बढ़ जाएगा क्योंकि बर्फ के पिछलने से समुद्र के पानी का स्तर भी बढ़ जाएगा। कार्बन - हाई - आक्साइड्स गैस के बढ़ते की वजह से केसर जैसी वीमारी हो सकती है। ग्लोबल वार्मिंग की वजह से ऐमिस्ट्राव

का विस्तार ढोने का साथ-साथ पशु-पक्षियों
की कई प्रजालियाँ भी विलुप्त हो रही हैं।
ग्लोबल नामिंग के अधिक बढ़ने की वजह से
आकसीजन की मात्रा भी कम होती जा रही है।
जिसकी वजह से आजान परत कमज़ोर होती
जा रही है।

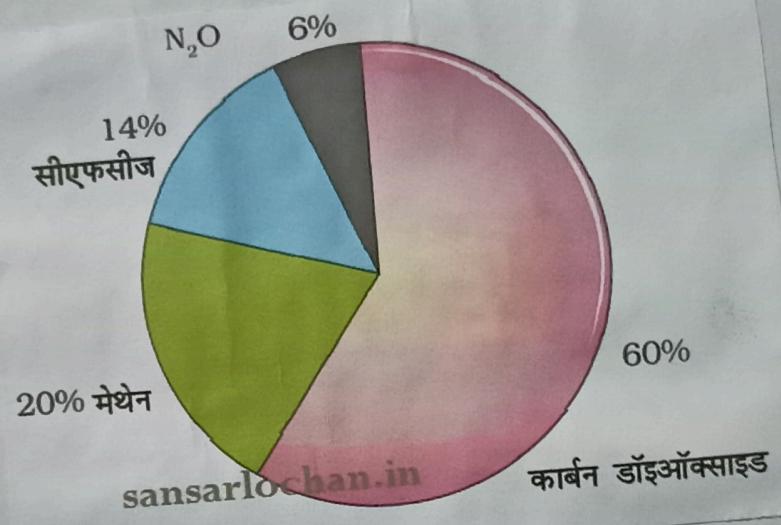
ग्लोबल नामिंग के बढ़ने के साधनों के
कारण कुछ वर्षों में इसका प्रभाव विलुप्त
स्पष्ट हो चुका है। अमेरिका के भूगभिय
सर्वेक्षणों के अनुसार मोटाना ग्लोबलियर राष्ट्रीय
पार्क में 150 ग्लोबलियर हुआ करते 27 लैकिन
इसके प्रभाव की वजह से अब सिर्फ 25 ही बचे

बड़े जलवायु परिवर्तन से कूफान अब आर
थतस्ताक और शाकिशाली होता जा रहा है।

परिणाम :

तापमान अंतर से ऊर्जा लेकर प्राकृतिक तूफान बहुत ज्यादा राकिशालि हो जा रहे हैं। 1895 के बाद से साल 2012 को सबसे गर्म साल के रूप में घोषित किया गया है और साल 2003 के साथ 2013 की 1880 के बाद से सबसे गर्म साल के रूप में घोषित किया गया।

ग्लोबल वार्मिंग की वजह से बहुत सारे जलवायु परिवर्तन हुए हैं जैसे गर्मी के मौसम में बहाँतरी, हँडी के मौसम में कमी, तापमान में वृद्धि, वायु-चक्रण के रूप में बदलाव, झेट स्ट्रीम, विवर मौसम बरसात, बर्फ की छातियों का पिघवात, बाढ़, सूखा आदि। ग्लोबल वार्मिंग के अधिक बढ़ने की वजह से आकस्मीजन की मात्रा भी कम होती जा रही है जिसकी वजह से ओजोन परत कमज़ोर होती जा रही है।



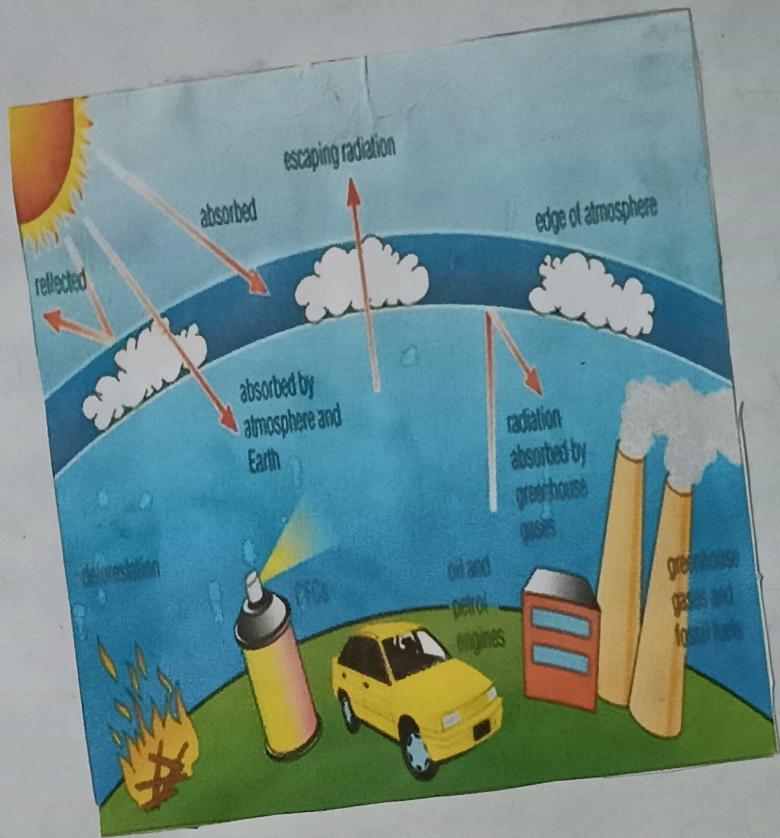
राजीवल वार्मिंग की शक्तियाम के उपाय :

सरकार को राजीवल वार्मिंग को खत्सु
करने के लिए लागों में जागरूकता का अभियान
चलना चाहिए। जागरूकता के अभियान का काम
किसी भी एक राष्ट्र के कर्णे से नहीं होगा।
इस काम को हर राष्ट्र के द्वारा करना जरूरी है।

राजीवल वार्मिंग से बहुत तरह की हानियाँ
हैं तो जिन्हें ठीक तो नहीं किया जा सकता
लेकिन राजीवल वार्मिंग को बढ़ने से रोका जा
सकता है जिससे बफिले हलाको को पिछलने से
बचाया जा सके। वाहनों और उद्योगों में
हानिकारक गैसों के लिए समाधान किये जाने
चाहिए जिससे राजीवल वार्मिंग को कम किया
जा सके।

जो चीजे ओजान परत की हानि पहुंचती है
 उन सभी चीजों पर प्रतिबंध लगाना चाहिए। इमें
 कुछ उपायों के द्वारा इसे बढ़ने से रोकना होगा
 जिन वाहनों से प्रदूषण डूटा है उन पर रोक
 लगानी चाहिए। हूंडे करने वाले उपकरणों का
 कम प्रयोग करना चाहिए। पेड़ों की कटाई को
 रोककर अधिक-से-अधिक पहुंच लगाने चाहिए।

सामान्य वाहनों की जगह पर कम ऊजा की
 व्यपत वाले वाहनों का प्रयोग करना चाहिए,
 जितना ही सके प्रदूषण करने वाले वहनों का
 कम प्रयोग करना चाहिए जिससे प्रदूषण की कमी
 किया जा सके। जिन वस्तुओं को नष्ट नहीं
 किया जा सकता है उन्हें रिसाइकिंग की
 सहायता से द्विवारा प्रयोग में लाना चाहिए।



लाईटो का कम प्रयोग करना चाहिए जब आवश्यकता हो तभी लाईटों का प्रयोग करना चाहिए। गर्म पानी का बहुत ही कम प्रयोग करना चाहिए। पैकिंग करने वाले प्लास्टिक के साधनों का कम प्रयोग करना चाहिए। विजली के साधनों का कम से-कम प्रयोग करना चाहिए। जल संरक्षण और वायु संरक्षण के लिए प्रयास करने चाहिए।

निष्कर्ष

ग्लोबल वार्मिंग कम करने के उपाय, हमें विजली के स्थान पर स्वच्छ ऊर्जा जैसे सारे ऊर्जे, पवन ऊर्जा तथा भू-तापिय ऊर्जा द्वारा उत्पादित ऊर्जे का उपयोग करना चाहिए। कौपल, लेल के जलने के स्थार की कम करना चाहिए। परिवहन और इलेक्ट्रिक उपकरणों का उपयोग कम चाहिए इससे ग्लोबल वार्मिंग का स्थार काफी हद तक कम होगा।

उपसंहार :

रामोबाल वामिनी को कम करने के लिए
जितने हो सके उतने प्रयत्न जरुर करने चाहिए,
वृद्धाश्रयण के लिए लागत को प्रत्याहित करना
चाहिए जिससे काबिन-डाई-आकसाइट की मात्रा
कम हो सके और प्रदूषण को कम किया जा
सके।

* * *